कहानी

रिश्ते का पंचनामा

श्यामल बिहारी महतो

श्यामल बिहारी महतो हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ कथाकार हैं। इनकी कहानी संग्रह 'बहेलियों के बीच' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित। वर्तमान में तारमी कोलियरी सीसीएल कार्मिक विभाग में वरीय लिपिक स्पेशल ग्रेड पद पर कार्यरत और मजदूर यूनियन में सक्रिय। बोकारो, झारखंड में निवास।

"मैं तुम्हें बेटा कहूं यासाढ़ू ...?" बाप रामदीन भरी पंचायत में इकलौते बेटे राधेश्याम से बार-बार पूछता रहा और बेटा राधेश्याम बार-बार यही कहता रहा- "आप मेरे बाप हो और बाप ही रहोगे....! राधेश्याम राधा की ओर देख रहा था और राधा-राधेश्याम की ओर ।

इतिहास के पन्नों में लिखा जाने वाला यह एक अनोखा और ऐतिहासिक पंचायत फैसला होने जा रहा था । ऐसा मामला न कभी किसी ने देखा था न सुना था । पंच हैरान और असमंजस में डूबे नजर आ रहे थे। पर पंचायत में औरतों की भागीदारी में कोई कमी न थी। उधर युवाओं के बीच हवाबाजी जैसा माहौल था। इन सबसे बेखबर रामदीन कपार पर हाथ धरे एक कोने में बैठा हुआ था या यूं कहिए कि बेटे राधेश्याम ने उसे कोना पकड़ा दिया था। जहां रह-रह कर उसकी कानों में उसके बचपन के दोस्त महेश बाबू की कही बातें आ-आ कर टकरा रही थी जैसे कभी कभी पानी की लहरें पत्थरों से टकराती हैं।

"रामदीन, तुम दोनों हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के दिन राधा और राधेश्याम को राधा-कृष्ण बना देतो हो", अगर बड़े होकर ये दोनों सचमुच के राधा कृष्ण बन घूमने लगे तब क्या करोगे- कभी कभी बचपन की आदतें छूटने की बजाय और गहरी होती जाती है, ऐसा कई बार देखा सुना गया है...!"

"अरे नहीं महेश बाबू !" रामदीन हंसा था- "ऐसा थोड़े न होता है, बचपन खेलने कूदने का दिन होता है, बड़ा होने पर सब रिश्तों में बंध जाते हैं । तुम्हारी सोच फिजूल है ।"

"देखते है आगे आगे होता है क्या !"

घटना डोमनीडीह की है। इस गांव में ह्मेशा कुछ न कुछ नया प्रयोग होता रहा है। सालों पहले इसी तरह की एक पंचायत बैठी थी तब के सुमहतो की जमीन हड़पने के लिए उसकी इकलौती पुत्री को उसी गांव के घनश्याम ने अपहरण कर लिया और एक सप्ताह अपने साथ रखा। पंचायत बैठी। पंचों ने लड़की से इजहार लिया। लड़की बोली-

"घनश्याम ने मेरी इज्जत के साथ खेल लिया है अब दूसरे को खेलने कैसे दें। यही मेरा मरद होगा।" अंधे को क्या चाहिए दो आंखें। घनश्याम और उसका बाप यही तो चाहता था। उसके बाद कईयों ने। इस तरह का प्रयोग किया और सफल रहा था पर राधा और राधेश्याम वाला प्रयोग इस पंचायत के लिए बिलकुल लिए बिल्कुल नया था- नथ उतारने जैसा ही...! दो दिन पहले रामदीन थाने में जाकर बेटे राधेश्याम पर कूल खानदान को धोखा देने के मामले को लेकर केस कर दिया था। बयान पर लिखवाया- "मेरे बेटे राधेश्याम ने, हमारे कूल खानदान की नाक कटवा दी है। इन्होंने वो नीच काम किया है जो पीढ़ियों से हमारे खानदान में किसी ने आज तक नहीं किया है। मेरी चल अचल संपत्ति में अगर इसको हिस्सा चाहिए तो राधा को उसे छोड़ना होगा- उसे भूलना होगा....!"

बेटे ने बाप को ईंट का जवाब पत्थर से दिया। बयान में लिखवाया- "राधा मेरा बचपन का पहला और इकलौता प्यार है। राधा को मैं भूल जाऊं ये हो नहीं सकता और राधा मुझे भूल जाए- छोड दे यह मैं होने नहीं दूंगा। राधा है तो राधेश्याम है। राधा नहीं तो राधेश्याम भी नहीं। मैं बाप की संपत्ति को छोड़ सकता हूं, राधा को नहीं....!"

थाने के बड़ा बाबू का सर चकराने लगा। जीवन में इस तरह का पहला केस था। जवाब में लिखा "रामदीन, मामला बड़ा पेचिदा है, दोनों बालिग है और दोनों ने सांइस सीटी में शादी कर ली है। आज सांइस के आगे भूत-प्रेतों की कोई अहमियत नहीं रह गई है। कानून आपकी कोई मदद नहीं कर सकती है। आप पंचायत बुला लो। पंचायत ही इसका सही फैसला दे सकता है..!"

दौड़ा-दौड़ा रामदीन पहुंचा था अपनी ससुराल। बूढ़े ससुर से कहने लगा- "अब आप ही कुछ कर सकते हैं, राधा को समझा बुझाकर अपने घर ले आइए, वरना हम दुनिया में अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे..!"

"दामाद बाबू, पानी सर से ऊपर बहने लगा है, मेड़ बांधना संभव नहीं है अच्छा होगा खेत का किनारा ही खोल दो। गलत लाड़ प्यार का नतीजा कभी अच्छा नहीं हुआ है..!"

"बुढा सठिया गया है ....!" रामदीन कुढ़ते हुए ससुराल से निकल गया।

रामदीन रात भर करवटें बदलता रहा। सुबह हुई पर वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका था। बेटे ने क्या खूब सबक दिया था। उस लाड़ प्यार का जो उसे बचपन में मिला करता था।

राधा जब पांच साल की थी तो मां मर गई थी। भोज काज के बाद जब रामदीन पत्नी बेटे के साथ घर लौटने लगा था तो दरवाजे के सामने राधा टूअर जैसी खड़ी हो गई थी। चम्पा देवी बड़ी बहन थी और राधा सबसे छोटी। उसके सीने में मां जैसी फिलिंग्स जाग उठी। लपक कर उसने राधा को गोद में उठा लिया और साथ ले आई। राधेश्याम राधा से एक वर्ष बड़ा था। इस तरह दोनों साथ-साथ बढ़े और पढ़ें।

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन चम्पा देवी राधा को राधा रानी बना देती और रामदीन राधेश्याम को कृष्ण की तरह सजा देता ! और दोनों पति-पत्नी खूब आनंदित होते। राधेश्याम को बांसुरी बजाना नहीं आता परन्तु राधा से चुहल करना उसे खूब आता था। यही चुहलबाज़ी और कृष्ण सा शरारत समय के साथ जाने दोनों को कब कितना करीब ले आया दोनों में किसी को पता नहीं ! पहले मिडिल स्कूल फिर हाई स्कूल और कॉलेज। एक ही मकसद एक ही लक्ष्य ! "दोनों जियेगें भी अब साथ साथ" जब ये कसम दोनों खा रहे थे तब दोनों कॉलेज के बाहर के एक होटल में समोसे खा रहे थे और ये गीत गुनगुना रहे थे- "छोड़ेंगे न हम तेरा साथ वो साथी मरते दम तक .." यह देख होटल वाला भी मुस्कुरा रहा था। यह अनोखा लगाव कब दोनों के लिए जरूरत बन गई, इसका एहसास तब हुआ जब एमसीए करने के बाद राधेश्याम को हैदराबाद की एक मल्टीनेशनल सॉफ्टवेयर कंपनी से बुलावा आ गया। जाने लगा तो राधा रास्ता रोक खड़ी हो गई "मेरा क्या होगा ! तुम्हारे बगैर मैं यहां पानी बिन मछली की तरह तड़प तड़प कर मर जाऊंगी...!"

"चिंतामत करो राधा रानी, ज्वाइनिंग और रहने की व्यवस्था होते ही मैं तुम्हें हैदराबाद घूमाने के बहाने बुला लूंगा। फिर सोचेगें आगे हमें क्या करना है..।" राधेश्याम चला गया। राधा को वृन्दावन सूना-सूना सा लगने लगा। दिन भर कमरे में पड़ी रहती। चम्पा देवी के बहुत कहने पर कभी थोड़ा बहुत कुछ खा लेती। पर खाने के वक्त भी उसका सारा ध्यान राधेश्याम पर

> राधा का राधेश्याम के पास पहुंचने के दो दिन बाद घर में रामदीन के हाथ राधा और राधेश्याम के लिखे कई पत्र हाथ लगे तो रामदीन नींद से जागा। पत्र से ही उसने जाना कि राधा और राधेश्याम जीवन के रास्ते में दोनों कितने आगे निकल चुके हैं। कदम दोनों का कितना आगे बढ़ चुका है। इतना तो द्वापर में कृष्ण राधा के कदम भी नहीं बढ़े थे। रामदीन ने घर में किसी से कुछ नहीं कहा। मन में तय कर लिया। लौटने दो दोनों को लौटा से पिटूंगा।

लगा रहता था। पन्द्रह दिन बीत चुका था पर राधेश्याम का न फोन न मैसेज। राधा पागल हुई जा रही थी। शाम को फोन करने का उसने तय कर लिया था तभी दोपहर को उसके फोन पर मैसेज आया- "अपने सारे समानों की पैकिंग कर लो, सीट कन्फर्म हो चुका है, कल शाम हैदराबाद एक्सप्रेस में बैठ जाना। मैं समय पर स्टेशन पहुंच जाऊंगा ...!"

राधेश्याम ने मां को अलग से मैसेज किया- "मां, राधा हैदराबाद की चार मीनार देखना-घूमना चाहती है, उसका रेलवे टिकट कन्फर्म है। कल शाम उसे हैदराबाद एक्सप्रेस में बिठा देगी- प्लीज मां!" बेटे के आग्रह ने चम्पा देवी को आगरे का ताजमहल देखने की याद ताजा कर दिया था। तभी चम्पा देवी को दोनों के प्यार को समझ लेनी चाहिए थी पर वो तो राधा को गाड़ी में बिठाने ऐसे चली आई जैसे कोई मां बेटी को ससुराल विदा करने आती है- अब भूगतो लो। अपना नाक अपने हाथ काटने चली।

राधा का राधेश्याम के पास पहुंचने के दो दिन बाद घर में रामदीन के हाथ राधा और राधेश्याम के लिखे कई पत्र हाथ लगे तो रामदीन नींद से जागा। पत्र से ही उसने जाना कि राधा और राधेश्याम जीवन के रास्ते में दोनों कितने आगे निकल चुके हैं। कदम दोनों का कितना आगे बढ़ चुका है। इतना तो द्वापर में कृष्ण राधा के कदम भी नहीं बढ़े थे। रामदीन ने घर में किसी से कुछ नहीं कहा। मन में तय कर लिया। लौटने दो दोनों को लौटा से पिटूंगा।

उधर राधा और राधेश्याम ने हैदराबाद सांइस सिटी में रिश्तों की टटटी करवा दी और एक मंदिर में जाकर दोनों ने शादी कर ली। इसकी सूचना राधेश्याम ने फोन पर अपने बचपन के मित्र सुदामा को दिया। जवाब में सुदामा ने कहा- "तुम दोनों गांव लौटना नहीं। तुम्हारे प्यार का भण्डाफोड हो चुका है, तुम्हारा बाप सांप की तरह फुफकार रहा है- "आने तो दो..!" और तुम्हारी मां अपने ममता की गला घोंटने की बात कहती फिर रही है- "प्यार करने के लिए राधा ही मिली थी उसे ..!" आगे क्या करोगे तुम जानो ...! और फोन कट गया था।

राधेश्याम राधा को लेकर नवरात्र में घर लौटा-पति पत्नी के रूप में ! घर के दरवाजे उन दोनों के लिए बंद मिला। "इस घर में इन दोनों के लिए कोई जगह नहीं है ..!" बाप दरवाजे पर खड़ा हो गया था।

सुदामा का घर ही उन दोनों के लिए ठिकाना बना था। पर कब तक ..? सामने बड़ा सवाल खड़ा हो गया था।

"रामदीन...वोरामदीन .. अरे भाई कहां खो गया है...?"

मुखिया जी ने आवाज लगाई तो रामदीन सहसा उठ खड़ा हो गया "जी मुखिया जी ..!"

"रामदीन आप एक बार फिर सोच लीजिए, दोनों जवान है और दोनों ने शादी कर ली है, आपको रखना है या नहीं...?"

"हमने कह दिया मुखिया जी, इन दोनों ने जो अपराध किया है उसे मैं क्या कोई शहर भी इन्हें रहने की जगह न दे।"

"ठीक है, आप बैठ जाइए..." मुखिया जी ने पूरी पंचायत पर एक नजर डाली फिर बोला- "राधेश्याम तुम दोनों ने जो अपराध और पाप किया है, एक पवित्र रिश्ते को कलंकित किया है, उससे पूरे समाज का सिर नीचा हुआ है। न छूटने वाला दाग़ लगाया है तुम दोनों ने। उसकी सिर्फ एक सजा हो सकती है ...!" मुखिया जी क्षण भर के लिए रूके थे। सामने राधेश्याम की मां एक औरत से उलझ गयी थी। रामदीन ने जाकर उसे शांत किया।

मुखिया जी कह रहे थे- "इस अपराध की एक ही सजा हो सकती है कि तुम दोनों को धक्के मार कर गांव से बाहर कर दिया जाए। लेकिन मैं इसके पक्ष में नहीं हूं। अपराध तो तुम दोनों ने किया है पर ऐसा भी नहीं कि उसे माफ नहीं किया जा सकता है। मेरा फैसला है कि धंसा हुआ मंडपथान को तुम दोनों एक महीने के अंदर फिर से खड़ा कर दो- नया बना दो, इससे तुम दोनों का अपराध की सजा भी माफ हो जाएगी और पाप भी कट जाएगा..! क्यों भाई लोग आप सबों की क्या राय है...?"

"आपने ठीक कहा मुखिया जी ..!"

"हां हां मुखिया जी हम सब भी आपसे सहमत हैं..।"

इससे पहले कि राधेश्याम कुछ कहता उसका बाप बोल उठा- "यह भी कोई सजा हुई, मैं सहमत नहीं हूं..!"

"यह पंचायत का फैसला है रामदीन केवल मेरा नहीं...!"

"हम तैयार हैं मुखिया जी...!" राधेश्याम ने कहा और राधा को लेकर सुदामा के घर की ओर बढ़ गया।

रात को रामदीन पत्नी चम्पा से कह रहा था- "हमारा प्लान कामयाब रहा। तुम जो चाह रही थी बहु के रूप में तुम्हें राधा मिल गई और मेरे इम्तिहान में मेरा बेटा पास हो गया...!"

"बड़ा कड़ा इम्तिहान लिया तूने मेरे बेटे का...!"

"सोने की तरह निखर भी तो गया...!"

"मां ! राधा मौसी को अपने घर की बहु बनाने के लिए आप दोनों ने इतना बड़ा खेल रचा ..!"

"देखा बेटी" संगीता दरवाजे के सामने खड़ी कब से उन दोनों की सारी बातें सुन रही है....!